देवरिया जनपद के ग्रामीण विकास का क्षेत्रीय प्रतिरूप

डॉ० सत्यकीर्ति सिंह,

आदर्श सत्येंद्र महाविद्यालय, माल, लखनऊ।

सामान्य परिचय

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सकल राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के बावजूद ग्रामीण अर्थ तंत्र में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है, और ना ही गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में विशेष कमी आई है। अर्थव्यवस्था के विभिन्न प्रखंडों में तीव्र गति से विकास हुआ है, परंतु क्षेत्रीय स्तर पर विकास की लहर बहुत ही धीमी रही है, अपितु विकास प्रक्रिया के क्षेत्रीय प्रतिरूप को उभारने के लिए स्थानीय संसाधनों के विकास के साथ ही साथ जनता की सहभागिता की आवश्यकता महसूस की गई। अविकसित , अल्पविकसित कृषि अर्थ तंत्र वाले क्षेत्रों में विकास प्रक्रिया के समुचित क्रियान्वयन के लिए कृषि के अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर सुलभ संसाधनों के विकास द्वारा ही समुचित ग्रामीण विकास प्रतिरूप को प्राप्त किया जा सकता है।

भौगोलिक रूप में ग्रामीण विकास की संकल्पना ग्रामीण परिवेश में मात्रात्मक, गुणात्मक एवं संरचनात्मक प्रत्यावर्तन हेतु नियोजन एवं क्रियान्वयन की एक प्रक्रिया है, जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत अवस्थापना तत्व तथा प्राविधिक अंतर क्रियाओं और भविष्य में होने वाले परिवर्तनों के मध्य संयोजन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। जो सामाजिक एकीकरण तथा समाज कल्याण के रूप में प्रकट होती है। इस प्रकार ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण परिवेश में संरचनात्मक रूपांतरण से है। जिससे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संस्थाओं एवं अवस्थापना पत्तों, उत्पादन प्रक्रिया एवं ग्रामीण जनसंख्या के जीवन स्तर में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन होता है। अस्तु ग्रामीण विकास प्रक्रिया एक निरंतर क्रियाशील प्रक्रिया है, जो निर्धनता उन्मूलन के पश्चात अवरुद्ध नहीं होती है, बल्कि यही विकास प्रक्रिया का प्रारंभिक बिंदु है।

अतएव ग्रामीण विकास एक सापेक्षिक शब्द है, जो क्षेत्र विशेष अथवा समाज के उपेक्षित स्तर से तुलनीय होता है। जहां विकास प्रक्रिया में आर्थिक वृद्धि का तात्पर्य सकल उत्पादन अथवा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि मात्र नहीं है, बल्कि इसे आय की असमानता में कमी तथा संसाधनों एवं अवसरों के समान वितरण के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार अधिक उत्पादन, रोजगार में वृद्धि एवं आय के समान वितरण के साथ ही निर्बल वर्ग की उत्पादन प्रक्रिया में पूर्व सहभागिता कथा न्याय संगत वितरण ग्रामीण विकास का मूल उद्देश्य है। जिससे सामाजिक न्याय चरितार्थ हो सके।

भौगोलिक रूप में ग्रामीण विकास के क्रियान्वयन हेतु विभिन्न मॉडल प्रस्तुत किए गए हैं। पश्चिमी देशों में विकास प्रक्रिया हेतु केंद्र एवं विकास केंद्र मॉडल अपनाया गया, परंतु भारतीय परिवेश में यह मॉडल वांछित सफलता नहीं प्राप्त कर सके, बल्कि केंद्रीकृत एवं असंतुलित विकास प्रक्रिया प्रारंभ हो गई। परिणाम स्वरूप नगर केंद्र तो विकसित होते गए, परंतु ग्रामीण क्षेत्र उपेक्षित होने लगे। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से श्रम एवं संसाधन दोनों का पलायन नगरीय केंद्रों की ओर होने लगा। अस्तु विभिन्न भारतीय भूगोल विदो एवं नियोजको ने ग्रामीण विकास हेतु विकेंद्रीकृत विकास मॉडल को अपनाए जाने पर बल दिया।

जिससे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं परंपरागत अर्थव्यवस्था के संदर्भ में विभिन्न तकनीकों, अभिज्ञानो एवं नवा चारों का प्रयोग कर ग्रामीण जनसंख्या को स्थानीय स्तर पर आर्थिक विकास के साधन सुलभ कराया जा सके एवं स्थानीय संसाधन तथा श्रम का उचित उपयोग एवं मूल्य प्राप्त हो सके।

इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में विकेंद्रीकृत विकास प्रक्रिया का सूत्रपात होगा, तथा ग्रामीण क्षेत्रों से संसाधन एवं श्रम का पलायन रुक जाएगा। रोजगार में वृद्धि से विकास प्रक्रिया में निरंतरता आने से पर निर्भरता कम होगी। इस प्रकार समन्वित ग्रामीण विकास नियोजन से वांछित ग्रामीण विकास स्तर को प्राप्त किया जा सकता है। जिसका निर्धारण विभिन्न सामाजिक, आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्व एवं जनसंख्या की सहभागिता के आधार पर किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया स्वतंत्रता के पूर्व कालों में राजनैतिक स्थिरता एवं शोषण के कारण अपने अपेक्षित विकास स्तर को प्राप्त नहीं कर सका। स्वतंत्रता के पश्चात जनपद की स्थापना तथा नवाचारों के प्रचार– प्रसार के परिणाम स्वरूप जनपद की विकास प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ी है। अस्तु अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण विकास स्तर के निर्धारण के लिए सामाजिक, आर्थिक अवस्थापना तत्वों के 11 चारों को लिया गया है जो निम्नलिखित हैं।

प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन

अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में पाई जाने वाली उपजाऊ दोमट मिट्टी का प्रभाव यहां की उत्पादकता पर पड़ा है। यहां औसत उत्पादकता 1910 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। संपूर्ण अध्ययन क्षेत्र में मिट्टी की मोटाई, क्षेत्रीय अंतर, कृषि अवस्थापना तत्वों की सुविधाओं में विषमता, फसल प्रतिरूप के आधार पर उत्पादकता के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप में अंतर मिलता है। जनपद देवरिया में सर्वाधिक प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन रामपुर कारखाना में मिलता है। सबसे कम भागलपुर में मिलता है। तालिका संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि उत्पादन का अति उच्च स्तर रामपुर कारखाना, भलुअनी एवं रुद्रपुर में मिलता है। उच्च स्तर उत्पादन भाटपार रानी, भटनी, लार, एवं देवरिया सदर में मिलता है।

तालिका संख्या 1.1
जनपद देवरिया में प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन (किग्रा० में)

क्रमांक	मात्रा (किलोग्राम में)	स्तर	विकासखंड की संख्या
1.	2000 से अधिक	अति उच्च	3
2.	1900–2000	उच्च	4
3.	1800–1900	मध्यम	5
4.	1700–1800	निम्न	1
5.	1700 से कम	अति निम्न	2

सर्वाधिक प्रति व्यक्ति उत्पादन भलुअनी में 345 किलोग्राम है। जबकि सबसे कम उत्पादन 182 किलोग्राम प्रति व्यक्ति है। विकासखंड वार देखा जाए तो स्पष्ट है कि उच्च स्तर के अंतर्गत भलुअनी ,रुद्रपुर एवं भागलपुर है। देसाई देवरिया, पथरदेवा गौरी बाजार, रामपुर कारखाना एवं बैतालपुर मध्यम स्तर के अंतर्गत हैं शेष विकासखंड निम्न स्तर के अंतर्गत हैं।

कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र से औसत रूप में 78.89% जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है, जो संपूर्ण कार्यरत जनसंख्या का लगभग तीन चौथाई है। यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि कृषि गत जनसंख्या के अंतर्गत कृषक एवं कृषि मजदूर दोनों सम्मिलित हैं। सर्वाधिक 89.09% जनसंख्या पथरदेवा तथा सबसे कम 63.25% जनसंख्या देवरिया सदर विकास खंड में कृषि कार्य में संलग्न है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कृषि का जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप में विभिन्नता मिलती है। स्पष्ट है कि इतनी 5% से अधिक जनसंख्या पथरदेवा बनकटा और बेताल पुर में कृषि कार्यों में संलग्न है। जहां अति उच्च स्तर का वितरण मिलता है। 80% से 85% कृषिगत जनसंख्या का उच्च स्तर का प्रतिरूप पांच विकास खंडों देसाई देवरिया, गौरी बाजार, भागलपुर, भलुअनी एवं रुद्रपुर में मिलता है। 75% से 85% कृषिगत जनसंख्या का मध्यम स्तर का वितरण प्रतिरूप तीन विकासखंड भाटपार रानी, लार, एवं भटनी में हैं। 70% से 75% एवं निम्न स्तर के अंतर्गत विकासखंड बरहज, रामपुर कारखाना एवं सलेमपुर सम्मिलित है। अति निम्न स्तर और 70% से कम जनसंख्या देवरिया सदर विकास खंड में कृषि कार्यों में संलग्न है।

विद्युत इक्रित ग्रामों का प्रतिशत़ं

विकास एवं वैज्ञानिक केंद्र के रूप में ऊर्जा का प्रमुख स्थान है। ग्रामों के विद्युतीकरण का स्तर ग्रामों के विकास स्तर का घोतक है। जनपद देवरिया में औसत रूप में 72.23% ग्राम विद्युतिकृत है। अध्ययन से स्पष्ट है कि भटनी एवं सलेमपुर में 80% से अधिक ग्रामों में विद्युतीकरण मिलता है। 70% से 80% के बीच एवं मध्यम स्तर के अंतर्गत भागलपुर, देवरिया सदर, भाटपार रानी, लार, बैतालपुर, गौरी बाजार, पथरदेवा ,रामपुर कारखाना, देसाई देवरिया एवं बहरज है। जबकि 70% से कम भलुअनी, रुद्रपुर एवं बनकटा के ग्रामों में विद्युतीकरण मिलता है।

साक्षरता प्रतिशत

अध्ययन क्षेत्र में औसत साक्षरता 44.31% है। सर्वाधिक साक्षरता 53.7% लार विकासखंड में तथा सबसे कम साक्षरता 35% पथरदेवा विकासखंड में मिलता है। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता के वितरण प्रतिरूप में विषमता मिलती है। 50% से अधिक साक्षरता तीन विकास खंडों भटनी, लार एवं गौरी बाजार में है सलेमपुर, भाटपार रानी, बरहज, भागलपुर, रुद्रपुर, रामपुर कारखाना भलुअनी एवं देवरिया सदर में मध्यम स्तरीय 40% से 50% के मध्य साक्षरता मिलती है। निम्न स्तरीय एवं 40% से कम साक्षरता वाले विकास खंडों में देसाई, देवरिया, बैतालपुर, बनकटा एवं पथरदेवा है।

प्रति लाख जनसंख्या पर चिकित्सा सुविधा

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के दृष्टिकोण से प्रति लाख जनसंख्या में सर्वाधिक चिकित्सा सुविधा 27 से अधिक भागलपुर विकासखंड में मिलती है। तथा सबसे कम देवरिया सदर में 19.42 चिकित्सा सुविधा प्रति लाख जनसंख्या पर मिलती है। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के संदर्भ में प्रति लाख जनसंख्या पर सर्वाधिक 24 से अधिक स्वास्थ्य सुविधा तीन विकास खंडों में भागलपुर, देसाई देवरिया एवं बहरज में मिलती है। जबकि मध्यम स्तर एवं 22 से 24 स्वास्थ्य सुविधा 8 विकास खंडों भाटपार रानी, बैतालपुर, रुद्रपुर

पथरदेवा, रामपुर कारखाना, गौरी बाजार, लार एवं बनकटा में मिलती है। सलेमपुर ,भलुआनी ,भटनी एवं देवरिया सदर विकास में 22 से भी कम स्वास्थ्य सुविधा प्रति लाख जनसंख्या पर मिलती है।

प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर चिकित्सा सुविधा

अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से सर्वाधिक 24 चिकित्सा सुविधाएं देवरिया सदर विकास खंड में तथा सबसे कम चिकित्सा सुविधा 15 भलुअनी विकासखंड में मिलती है अध्ययन से स्पष्ट है कि 22 से अधिक प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर चिकित्सा सुविधाएं केवल दो विकासखंड देवरिया सदर एवं भाटपार रानी में मिलती है। जो उच्च स्तर के अंतर्गत है। जबकि 20 से 22 चिकित्सा सुविधाएं एवं मध्यम स्तरीय वितरण अध्ययन क्षेत्र के पांच विकास खंडों देसाई देवरिया, सलेमपुर, रामपुर कारखाना, बैतालपुर एवं गौरी बाजार में मिलती है। 20 चिकित्सा प्रति 100 वर्ग किलोमीटर निम्न स्तरीय स्वास्थ्य सुविधा 8विकास खंडों भागलपुर, पथरदेवा, भटनी, बरहज, बनकटा, लार, रुद्रपुर, एवं भलुअनी में मिलती है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के संदर्भ में चिकित्सा सुविधाओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि देवरिया सदर एवं भाटपार रानी विकासखंड में चिकित्सा सुविधाओं का संकेंद्रण है, यह नगरीय केंद्र भी हैं। क्षेत्र में चिकित्सा सुविधाओं के वितरण प्रतिरूप में विभिन्नता मिलती है।

पारिवारिक उद्योगों में लगी जनसंख्या

पारिवारिक उद्योगों में लगी जनसंख्या सामाजिक आर्थिक स्तर का सूचक है। जनपद देवरिया में औसत रूप में 1.49% जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में लगी है। तालिका संख्या 1.3 के अध्ययन से स्पष्ट है कि दो विकास खंडों भागलपुर एवं देवरिया कसदर में 2% से अधिक जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में लगी है। 1.50% से 2.00% के बीच एवं मध्यम स्तर के अंतर्गत 4 विकास खंड भटनी, सलेमपुर, बरहज एवं रामपुर कारखाना सम्मिलित है।

तालिका संख्या 1.2
देवरिया जनपद में प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उत्पादन (किग्रा० में)

क्रमांक	मात्रा (किलोग्राम में)	स्तर	विकासखंड की संख्या
1.	300 से अधिक	अति उच्च	3
2.	250–300	उच्च	5
3.	250 से कम	मध्यम	7

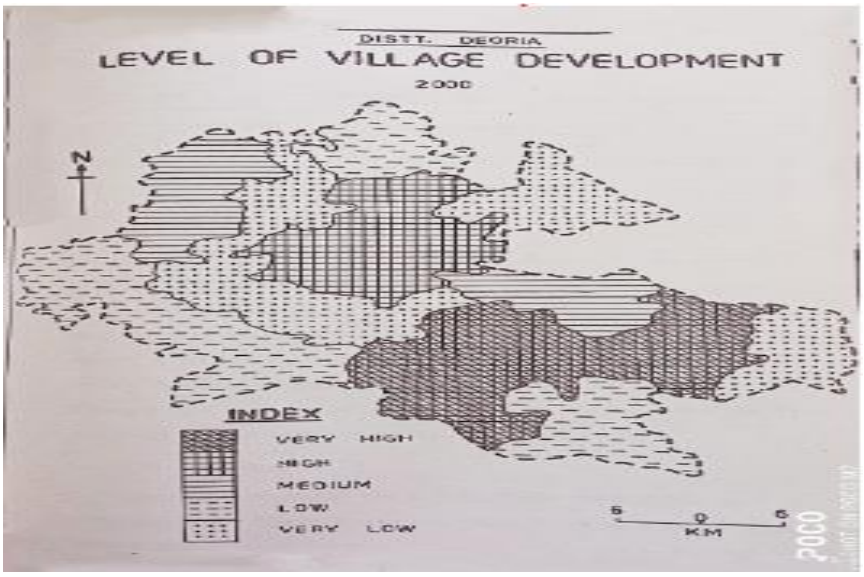

जबकि 9 विकास खंड रुद्रपुर, बनकटा, भलुअनी, लार, देसाई देवरिया,गौरी बाजार ,बैतालपुर, भाटपार रानी और पथरदेवा में निम्न स्तर एवं 1. 50: से भी कम जनसंख्या पारिवारिक उद्योगों में लगी हुई है।

REFERENCES

1) Sharma, S. K. and Malhotra, S. L. (1977). Integrated Rural Development, Approaches, Strategy and perspectives. Abhiaav, New Delhi, page 33.

2) W. U. Chi Yuen (1977). The nature of Modern Development in Sharma S. K. et. al. Dynamics of Development: An International perspectives. Concept Pub., New Delhi, Vol II, Page 6.

3) Madan G. R. and S Gupta (1968). Rural Social Structure and Agricultural Development. A Comparative study of two Villages in U. P. Bulletin of Anthropological survey of India 17, Page 78.

4) Reiger, H., Christoph (1975). Social & Political aspects of Economic Development planning in India, in Peter Mayer Dome & others et al. economic and social aspects of Indian Develioment. Inst of Development Research and Development policy Bochum. F. R. G., Vol. 19, Page 93.